पाठ–4

वर्षा समीर

बरसात की आती हवा,
वर्षा धुले आकाश से,
या चंद्रमा के पास से,
या बादलों की साँस से,
मधु सिक्त मदमाती हवा,
बरसात की आती हवा !!1!!

यह खेलती है ढाल से,
ऊँचे शिखर के भाल से,
आकाश से पाताल से,
झकझोर लहराती हवा,
बरसात की आती हवा !!2!!

यह खेलती सर–वारि से,
नद–निर्झरों की धार से,
इस पार से, उस पार से,
झुक–झूम बल खाती हवा,
बरसात की आती हवा !!3!!

यह खेलती तरु माल से,
यह खेलती हर डाल से,
लोनी लता के जाल से,
अठखेलती इठलाती हवा,
बरसात की आती हवा !!4!!

यह शून्य से होकर प्रकट,
नव हर्ष से आगे झपट,
हर अंग से जाती लिपट,
आनंद सरसाती हवा,
बरसात की आती हवा !!5!!

इसकी सहेली है पिकी,
इसकी सहेली है चातकी,
संगिनी शिखीन, संगी शिखी,
यह नाचती गाती हवा,
बरसात की आती हवा !!6!!

रंगती कभी यह इंद्र धनु,
रंगती कभी यह चंद्र धनु,
पीत घन, अब रक्त घन,
रंगरेल लहराती हवा,
बरसात की आती हवा !!7!!

हरिवंश राय बच्चन

शब्दार्थ

मंद	–	धीमी	तरुमाल	–	पेड़ों की कतार
लता	–	बेल	शून्य	–	आकाश
ढाल	–	ढलान / उतार	भाल	–	मस्तक
तरुवर	–	पेड़	हर्ष	–	प्रसन्न
पिकी	–	कोयल	चातकी	–	पपीहा (मादा)
शिखिन	–	मोरनी	शिखी	–	मोर
इंद्र धनु	–	सात रंग की आकृति (जो बरसात के बाद आकाश में दिखाई देती है)			
पीत घन	–	बरसात के बाद आसमान में दिखने वाले पीले बादल			

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

चंद्रमा, तरुवर, अठखेलती, इठलाती, झकझोर।

सोचें और बताएँ–

1. कविता में किसकी अठखेलियों का वर्णन है?
2. हवा किससे खेलती है।
3. हवा की सहेलियाँ कौन–कौन हैं?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. इस कविता में वर्णन किया गया है–
   (क) ग्रीष्म ऋतु का (ख) वर्षा ऋतु का
   (ग) शरद ऋतु का (घ) बसंत ऋतु का ( )
2. बरसात में हवा होती है –
   (क) आनंददायक (ख) कष्टदायक
   (ग) प्रचण्ड (घ) शुष्क ( )

निम्नलिखित शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(बादलों, हर्ष, झकझोर, ढाल)

1. वर्षा धुले आकाश से या ..... की साँस से।
2. आकाश से पाताल से ..... लहराती हवा।
3. यह शून्य से होकर प्रकट नव ..... से आगे झपट।
4. यह खेलती है ..... से, ऊँचे शिखर के भाल से।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मधु सिक्त मदमाती हवा से क्या अभिप्राय है?
2. बरसात की हवा किसके भाल से खेलती है?
3. तरुमाल का क्या अर्थ है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. बरसात की हवा किस–किससे खेलती है?
2. बरसात की हवा की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?
3. वर्षा ऋतु में ही इंद्रधनुष क्यों दिखाई देता है?

भाषा की बात

1. आकाश से
   साँस से
   ढाल से
   भाल से

कविता की अंतिम समान ध्वनि को तुक कहते हैं। प्रस्तुत कविता में 'से' तुक का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार समान ध्वनियों का प्रयोग करते हुए आप भी कविता की पंक्तियाँ लिखिए।

2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए–

पीत घन, रक्त घन शब्दों में 'पीत' व 'रक्त' शब्द 'घन' शब्द की विशेषता बता रहे हैं, इस प्रकार **संज्ञा, सर्वनाम आदि की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं तथा जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।** विशेषण के प्रकार निम्नानुसार है–

क्र.सं.	विशेषण के प्रकार	परिभाषा	उदाहरण
1	गुणवाचक विशेषण	किसी वस्तु/व्यक्ति या भाव के रंग, रूप, आकार, अवस्था आदि की विशेषता बताने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।	मोटा हाथी, बड़ा घर, शुद्ध पानी, नीला आसमान।
2	संख्यावाचक विशेषण	जिन शब्दों से किसी वस्तु, की संख्या का पता चलता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।	तीन अण्डे, दूसरा छात्र, सैकड़ों पशु, कुछ लोग।
3	परिमाणवाचक विशेषण	किसी विशेष्य की मात्रा बताने वाले शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।	तीन लीटर दूध, पाँच किलो अनार, सात मीटर कपड़ा, थोड़ा घी।
4	संकेतवाचक विशेषण (सार्वनामिक विशेषण)	जब कोई सर्वनाम विशेषण का कार्य करता है, उसे संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण कहते हैं।	वह लड़का अच्छा खिलाड़ी है। यह आदमी यहीं रहता है।

आप भी निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण व विशेष्य शब्द छाँटिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

महामानव, गुलाबी साड़ी, पाँच बालक, ठंडी हवा

पाठ से आगे

1. 'बरसात की हवा ढाल से, ऊँचे शिखर के भाल से, आकाश से पाताल से खेलती है,' वैसे ही आप किस–किससे खेलना पसंद करते हैं?
2. ऋतुओं से हम क्या–क्या सीख सकते हैं ?

यह भी करें

1. पाठ में बरसात की हवा के बारे में जानकारी दी गई है। आप अपने शिक्षक/शिक्षिकाओं के सहयोग से ग्रीष्म ऋतु की हवा व वसंत ऋतु की हवा के बारे में जानकारी प्राप्त कर कविता के रूप में चार–चार पंक्तियाँ लिखिए।

यह भी जानें

1. हमारे देश में छह ऋतुएँ होती हैं –वसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, शीत ऋतु, शिशिर ऋतु (हेमंत ऋतु)। वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इस ऋतु में मौसम बहुत ही सुहावना होता है। फूलों की महक से वातावरण आनंददायक बन जाता है।

तब और अब

पुराना रूप	चन्द्रमा	आनन्द	इन्द्र
मानक रूप	चंद्रमा	आनंद	इंद्र

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

The volume of the nature is the book of knowledge.

विराट प्रकृति ज्ञान की पुस्तक है।